International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 693-695

बृहत्त्रयी में वर्णित प्रमुख नदियाँ

डॉ. निशा
पी–एच.डी. (संस्कृत), हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, समरहिल, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य विश्व का एक अनुपम एवं प्राचीनतम साहित्य है। यह वैदिक तथा लौकिक दो भागों में विभक्त है। उपनिषत्पर्यन्त साहित्य वैदिक तथा तदुत्तरकालीन समग्र साहित्य लौकिक संस्कृत साहित्य में समाविष्ट होता है। इसी लौकिक श्रृंखला में महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीय, महाकवि माघ ने शिशुपालवध तथा महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित महाकाव्य की रचना की है। किरातार्जुनीय महाकाव्य की कथावस्तु का मूलस्त्रोत महाभारतान्तर्गत वनपर्व है। शिशुपालवध महाकाव्य के कथानक का आधार महाभारतान्तर्गत सभा पर्व के राजसूय पर्व, अर्द्याभिहरण पर्व तथा शिशुपालवध पर्व है। नैषधीयचरित महाकाव्य की कथावस्तु का आधार महाभारत के अन्तर्गत वनपर्व का प्रसिद्ध नलोपाख्यान पर्व है। इन तीनों महाकवियों की कृतियों के लिए बृहत्त्रयी नाम दिया गया है। बृहत्त्रयी शब्द संस्कृत साहित्य में अत्यन्त प्रचलित हुआ है। त्रयी का अर्थ है–तीन काव्य। इन तीनों काव्य के लिए बृहत् शब्द का प्रयोग इनकी काव्य–सम्पत्ति तथा कलेवर–सम्पत्ति दोनों को ही दृष्टि में रखकर किया गया है। बृहत्त्रयी में तत्कालिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। बृहत्त्रयी में उस समय की भौगोलिक परिस्थितियों में नदियों का अत्यन्त मनोरम वर्णन किया गया है। नदियों में असि, गङ्गा, जम्बू, ताम्रपर्णी, नर्मदा, यमुना, विपाशा, शोण (सोन), सरयू, सरस्वती तथा सिप्रा (शिप्रा) इत्यादि नदियों का उल्लेख किया गया है।

नदी

नदी शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख ऋग्वेद के नदीसूक्त में किया गया है। नदीसूक्त में देवी के रूप में नदी की स्तुति की गई है। नदियों का पर्वतों से घनिष्ट सम्बन्ध बतलाया गया है।[1] निरूक्तानुसार नदी नाद या अव्यक्त शब्द करने वाली होती है।[2] अथर्ववेद में बतलाया गया है कि इन्द्र द्वारा वृत्रासुर को मार देने पर इकट्ठे बहते हुए जल ने जगत विख्यात नाद किया। इसलिए वे जल 'नदी' नाम से पुकारे जाने लगे।[3] अथर्ववेद में पत्थरों के बीच वेग से प्रवाहित होती हुई नदियों का भी उल्लेख किया गया है।[4] बृहत्त्रयी में भारतवर्ष की नदियों का विस्तृत वर्णन उपलब्ध होता है।

असि नदी

असि काशी की दक्षिण दिशा में स्थित बरसाती नदी है। इस नदी में स्नान करने से पाप समाप्त हो जाते हैं।[5] महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधचरित महाकाव्य में वाराणसी में असि नामक नदी के प्रवाहित होने का उल्लेख किया है।[6]

गङ्गा नदी

गङ्गा भारतवर्ष की पवित्र और पुण्यदायिनी नदी है।[7] किरातार्जुनीय महाकाव्य में गङ्गा को सुरसरिता, सुरपगा, सुरनिम्नगा, त्रिपथगा, त्रिमार्गगा, जाह्नवी और जह्नुकन्या आदि अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है।[8] महाकवि माघ ने गङ्गा नदी को सुरसिन्धु, सुरापगा, दिव्यसरित, त्रिस्त्रोत, त्रिमार्गगा, जह्नुतनया, जाह्नवी आदि की संज्ञा दी है।[9] नैषधचरित महाकाव्य में गङ्गा नदी के स्वर्गगङ्गा, स्वर्गसरित, स्वर्गसिन्धु, त्रिस्त्रोत, जह्नुपुत्री तथा मन्दाकिनी आदि नामों का उल्लेख किया गया है।[10]

किरातार्जुनीय[11] एवं शिशुपालवध[12] महाकाव्य में शिवजी द्वारा गङ्गा को अपने केशों में धारण करने का वर्णन किया गया है। महाकवि भारवि ने वेगयुक्त गङ्गा के हिमालय को उखाड़ने की कोशिश करने पर भगवान् शङ्कर द्वारा गङ्गा के वेग को रोकने का विवेचन किया है।[13] महाकवि माघ ने गङ्गा को विष्णु भगवान् के चरणांगुष्ठ से निकलने वाली[14] तथा महाकवि श्रीहर्ष ने गङ्गा को ब्रह्म के कमण्डलु, विष्णु के चरण और शङ्कर के मस्तक में स्थित माना है।[15] महाकवि भारवि ने अत्यधिक तीव्रगामी गङ्गा नदी के वेग को महातेजस्वी राजर्षि जह्नु द्वारा स्वयं में विलीन करने का वर्णन किया गया है।[16] माघ ने गङ्गा नदी को त्रिपथगामी होने के कारण 'अन्वर्थ' नाम वाली बतलाया है।[17] शिशुपालवध[18] तथा नैषधचरित[19] महाकाव्य ने गङ्गा यमुना के संगम स्थल का उल्लेख मिलता है यथा–पतितपावनी, कलकलनिनादिनी जाह्नवी एवं सूर्यपुत्री कालिन्दी के संगम स्थल प्रयाग को पापनाशक कहा गया है। राजा नल द्वारा उसी स्त्री को अपनी साम्राज्ञी बनाया जाएगा जिसने माघ महीने में प्रयाग में स्नान किया हो। किरातार्जुनीय महाकाव्य में इन्द्र अर्जुन से कहते हैं कि पवित्र गङ्गा नदी के जल से इन्द्रकील पर्वत का स्थान भी अत्यन्त पवित्र हो गया है। इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करके शीघ्रतया मोक्ष प्राप्त होता है।[20] नैषधचरित महाकाव्य में गङ्गा को मोतीतुल्य शुभ्रवर्ण कहा गया है।[21] काशी में दान रूपी गङ्गाजल याचक के लिए बिना निषेध हमेशा प्रवाहित होता रहता है और वहाँ पर निवास करके तथा गङ्गाजल को पीकर जीव मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है।[22] किरातार्जुनीय[23] तथा शिशुपालवध[24] महाकाव्य में गङ्गा नदी के समुद्र में लीन होने का भी वर्णन किया गया है।

जम्बू नदी

महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधचरित महाकाव्य में जम्बू नदी को सुमेरू पर्वत से निकलने वाली कहा है। हल्दी के तुल्य कान्ति वाली दमयन्ती को जम्बू नदी के कीचड़ से खींचकर निकाला गया है। दमयन्ती की देह उत्तम स्वर्ण के तुल्य है।[25] महाकवि जम्बू नदी का उल्लेख करते हैं कि जम्बूद्वीप में जामुन के रस से उत्पन्न अमृत नीरा जम्बू नदी बहती है। वहाँ की मिट्टी जाम्बूनद सुवर्ण कहलाती है।[26]

ताम्रपर्णी नदी

ताम्रपर्णी नदी भारतवर्ष में मलयाचल पर्वत से निकलती है।[27]

महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधचरित में ताम्रपर्णी नदी का उल्लेख किया है कि ताम्रपर्णी सरिता का जल अत्यन्त स्वच्छ और स्वादिष्ट है तथा चन्द्रकिरणें तो निर्मल और मनोहर ही है इसलिए ताम्रपर्णी के जल और चन्द्रकिरणों के संयोग से जो मोती उत्पन्न होते हैं वे अत्यन्त स्वच्छ, निर्मल तथा मनोज्ञ होते हैं।[28]

नर्मदा नदी

ऐसा कहा जाता है कि गङ्गा और सरस्वती की तुलना में नर्मदा विशेष पवित्र है। गङ्गा कनखल में, सरस्वती कुरूक्षेत्र में किन्तु नर्मदा ग्राम से अरण्य तक सर्वत्र पवित्रतम है। यमुना का जल एक सप्ताह में, सरस्वती का तीन दिन में, गङ्गा का यथाशीघ्र परन्तु नर्मदा का जल दर्शनमात्र से पवित्र कर देता है।[29] महाकवि श्रीहर्ष दमयन्ती के विषय में कल्पना करते हैं कि दमयन्ती उस नर्मदा नदी के तुल्य है, जिसके दोनों तट सूख गये हैं, बाल्यावस्था जल गर्मी से पूर्णतया शुष्क हो गया है। तटरूप बाहुयुगल मृणालों के समान है और स्तनयुग्म जल सूखने से उठ आए दो टापुओं जैसे प्रतीत हो रहे हैं।[30]

यमुना नदी

यमुना उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी है जो हिमालय के यमुनोत्री नामक स्थान से निकलती है।[31] शिशुपालवधानुसार यमुना नदी सूर्य की पुत्री है फिर भी अत्यन्त शीतल है, यमराज की बहन है लेकिन फिर भी सबको जीवन देने वाली है और कृष्णवर्ण वाली होती हुई भी शुद्धि को अधिक करने वाले जल से पापों को नष्ट करने में समर्थ है।[32] नैषधचरित महाकाव्य में अनेक स्थलों पर यमुना को सूर्यदेव की पुत्री बतलाया है।[33] महाकवि माघ ने यमुना को कलिन्दगिरी की स्त्री कालिन्दी[34] तथा महाकवि श्रीहर्ष ने कालिन्दी यमुना को कलिन्दगिरी की पुत्री कहा है।[35] शिशुपालवध[36] तथा नैषधचरित[37] महाकाव्य में गङ्गा–यमुना के संगम स्थल का उल्लेख किया गया है यथा–जिस नारी ने माघ महीने में पापनाशक श्याम यमुना और श्वेत–गङ्गा के संगम में स्नान किया हो, राजा नल उसी स्त्री को अपनी रानी बनाएंगे। महाकवि माघ ने वर्णन किया है कि यमुना ने ही समुद्र को पूरा किया है गङ्गा ने नहीं।[38]

विपाशा नदी

विपाशा नदी आजकल वियास (व्यास) नदी के नाम से प्रसिद्ध है।[39] ऐसा कहा जाता है कि इस नदी का नाम सुनने मात्र से ही पाप दूर हो जाते है।[40] महाकवि श्रीहर्ष के अनुसार प्लक्षद्वीप में विपाशा नामक नदी बहती है, जिसका जल घटता बढ़ता नहीं है। विपाशा नदी में कमल अत्यधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं।[41]

शोण (सोन) नदी

शोण मध्यप्रदेश का एक प्रसिद्ध नद है जो विन्ध्य पर्वत के अमरकंटक नामक पर्वत शिखर से निकला है।[42] नैषधचरित महाकाव्य में स्वयंवर के समय सरस्वती दमयन्ती से कहती है कि वरूण समस्त जलाशयों के अधिपति है। शोणनद और सरस्वती इनके अनुचर है। इसलिए ऐश्वर्यशाली वरूण का तुम वरण करो।[43]

सरयू नदी

सरयू उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी है। इसी के तट पर अयोध्या नगरी बसी है।[44] महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधचरित महाकाव्य में ऋतुपर्ण नामक राजा को अयोध्या नगरी का भूपाल[45] एवं उस नगरी में सरयू सरिता के प्रवाहित होने का भी उल्लेख किया है कि यदि दमयन्ती उस सरयू नदी में जल–विहार करना चाहती है तो उसे अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण से विवाह करना होगा।[46]

सरस्वती नदी

सरस्वती पंजाब की एक प्राचीन नदी है जिसका सूक्ष्म अंश अब भी कुरूक्षेत्र के पास वर्तमान है।[47] नैषधचरित महाकाव्य में महाकवि श्रीहर्ष ने नल की वाणी की उपमा सरस्वती नदी के जल से की है–जिस प्रकार सरस्वती नदी के जल का प्रवाह कहीं पर दिखाई देता है, कहीं पर लुप्त हो जाता है उसी प्रकार नल दमयन्ती के प्रश्नों का कहीं पर उत्तर देता है और कहीं पर मौन रहता है।[48] महाकवि ने सरस्वती नदी को वरूण देव का अनुचर भी बतलाया है।[49]

सिप्रा (शिप्रा) नदी

शिप्रा मालव की एक प्रसिद्ध नदी है जिसके किनारे पर उज्जयिनी नगरी बसी हुई है।[56] महाकवि श्रीहर्ष ने अवन्ति नामक नगरी में सिप्रा नदी के बहने का उल्लेख किया है। सिप्रा नदी के तट को तपस्थली कहा है। ऐसी सिप्रा नदी में यदि दमयन्ती जलक्रीड़ा करेगी तो सिप्रा नदी दमयन्ती के लिए सखी सदृश आनन्ददायिनी सिद्ध होगी।[51]

सन्दर्भ

1. ऋग्वेद, 10.75.1–9
2. नदना भवन्ति शब्दवत्यः। निरूक्त, 2.24
3. अथर्ववेद, 3.13.1
4. वही, 12.2.27
5. राजबली पाण्डेय, हिन्दू धर्मकोश, पृ० 67
6. नैषधचरित, 14.72
7. राजबली पाण्डेय, हिन्दू धर्मकोश, पृ० 220
8. किरातार्जुनीय, 6.5; 7.11; 8.27; 6.16; 7.35; 8.57; 6.1; 17.5; 6.3; 7.25
9. शिशुपालवध, 12.69; 13.27; 4.26; 14.77; 3.10; 12.23; 13.25; 12.69
10. नैषधचरित, 21.10; 19.66; 20.69; 5.7; 6.109; 15.54; 6.83; 20.3; 10.90
11. किरातार्जुनीय, 12.24
12. शिशुपालवध, 3.65
    वही, 16.46
    वही, 14.18
13. किरातार्जुनीय, 17.5
14. शिशुपालवध, 3.10
    वही, 16.46
15. नैषधचरित, 10.90
    वही, 21.12
16. किरातार्जुनीय, 17.52
17. शिशुपालवध, 12.23
18. वही, 4.26
19. नैषधचरित, 12.12
    वही, 15.54
    वही, 15.89
20. किरातार्जुनीय, 11.36
21. नैषधचरित, 6.69
22. वही, 11.120
23. खे रराज निपतत्करजालं वारिधेः पयसि गाङ्गमिवाम्भः। किरातार्जुनीय, 9.19

24. शिशुपालवध, 2.100
25. नैषधचरित, 7.13
26. वही, 11.86
27. विष्णु पुराण, 2.3.6,13
28. नैषधचरित, 20.21
29. पद्म पुराण, 2.9.6–7
30. नैषशचरित, 7.73
31. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, चतुर्थ खण्ड, पृ० 438
32. शिशुपालवध, 12.67
33. नैषधचरित, 2.103
    वही, 19.46
34. शिशुपालवध, 4.26
35. नैषधचरित, 12.12
36. शिशुपालवध, 4.26
    वही, 13.25
37. नैषधचरित, 12.12
    वही, 15.89
38. शिशुपालवध, 12.69
39. नगेन्द्रनाथ वसु, हिन्दी विश्वकोश, एकविंश भाग, पृ० 448
40. विष्णु पुराण, 2.4.2,10–11
41. नैषधचरित, 11.77
42. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पञ्चम खण्ड, पृ० 455; वही, हिन्दी शब्दसागर, पृ० 1036; कालिका प्रसाद, बृहत् हिन्दी कोश, पृ० 1562
43. नैषधचरित, 13.24
44. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पञ्चम खण्ड, पृ० 2598; नवल, नालन्दा विशाल शब्द सागर, पृ० 1414
45. नैषधचरित, 12.5
46. वही, 12.7
47. रामचन्द्र वर्मा, मानक हिन्दी कोश, पञ्चम खण्ड, पृ० 300
48. नैषधचरित, 9.4
49. वही, 13.24
50. रामचन्द्र वर्मा, हिन्दी शब्दसागर, पृ० 1005; वही, मानक हिन्दी कोश, पञ्चम खण्ड, पृ० 171; नवल नालन्दा विशाल सागर, पृ० 1342
51. नैषधचरित, 11.88–89